कहानी

दीक्षा

पी. सत्यवती

"सुन री मंगा, बाबूजी परसों माला ले रहे हैं। कल जल्दी आकर तुझे घर की साफ़-सफ़ाई करनी है। आने वाले चालीस दिनों में पहले हमारे ही घर आकर तुझे सवेरे-सवेरे काम निपटाकर जाना है।"

बाबूजी की माला के बारे में मंगा जानती है। माला लेने से पहले जो जुल्म वे करते हैं, यह भी वह जानती है। इसके अलावा माला लेने के बाद उनका जो 'लाड़-दुलार' होता है, यह भी वह बख़ूबी जानती है। इस दौरान बीबीजी की हड़बड़ी और पस्ती भी उससे छिपी नहीं रहती। "कल घर की सफ़ाई हो जानी चाहिए", मालकिन ने एक बार फिर चेताया।

चाहे कुछ भी हो जितने दिन वे 'दीक्षा' में रहते हैं, उतने दिन वह घर एक मंदिर जैसा बना रहता है। घर में क़दम रखते ही चमेली, गुलाब और अगरबत्ती की महक से एकदम मंदिर के से माहौल का आभास होने लगता है। मंगा का काम भी बहुत ज़्यादा बढ़ जाता है।

"दवाइयों की कम्पनी के बाबूजी कल दीच्छा ले रहे हैं। बीबीजी ने मकान की सफ़ाई करने के लिए कहा है। मुझे कल जल्दी जाना होगा।" घर आकर मंगा ने बुढ़िया से कहा।

"कौन-सी दीच्छा?" बुढ़िया ने पूछा।

"अय्यप्पा की दीच्छा। काले कपड़े पहनते हैं न, वह।"

"बाप रे, सुना है कि वह मंदिर तो बहुत दूर है और इस दीच्छा पर खरच भी बहुत आता है।"

"आता है तो क्या। उनको कुछ कमी है! अब चार साल से जा रहे हैं वे।" कहकर मंगा चूल्हा जलाने चली गयी।

सास को रात में दिखाई नहीं देता। दिन में थोड़ा-बहुत पकाकर बच्चों को खिला देती है। रात की ड्यूटी मंगा की है।

"इस बरस अपना रमेश भी माला लेने की बात कह रहा है। लाल कपड़ों वाली माला। भवानी माता की माला" बुढ़िया बोली।

"तुमसे कहा था क्या?"

"हां, सबेरे खाना खाते बखत कह रहा था। अच्छा ही तो है। यह पीना-वीना सब बन्द हो जाएगा।" दांत निकालकर बुढ़िया बोली।

"जब होगा, तब न!" कहकर मंगा काम में लग गयी।

घर में ठाकुरजी के लिए अलग कमरा। मंदिर जैसा। दरवाज़े में घंटियों वाले किवाड़। सारी मूर्तियां चांदी की। ऐसे लोग माला लें, तो अच्छा लगता है। लेकिन उसके पास कोई कमरा है? मंदिर है? रमेश जाने कैसे सब करेगा?

रात को रमेश दस बजे लौटा। वही, रोज़वाली बू। बकबक भी वही, रोज़ की। जो सब्ज़ी बनी होती है, वह पसन्द नहीं आती। चीख़ना और लड़ाई-झगड़ा। माला ले ले तो अच्छा ही है। यह सब तो नहीं होगा।

"अरी मंगा!" सवेरे उठते ही रमेश ने ऐसे कहा जैसे किसी निर्णय पर पहुंच गया हो, "अगले सुक्कर को मैं और मेरे दोस्त भवानी की माला ले रहे हैं।"

'जब ले, तब की बात है!' मंगा ने मन में कहा और "ठीक है।" कहकर टोकरी उठाकर काम पर चली गयी।

माला तो बाबूजी ने ही ली है, लेकिन पूजा का सारा इंतज़ाम बीबीजी को करना होता है। उन्हें ठाकुरजी की फोटो पर फूल चढ़ाने होंगे, घी में बत्ती भिगोकर रखनी होगा, दीपक जलाना होगा। अगरबत्तियों के स्टैंड में अगरबत्तियां लगाकर साथ में माचिस तैयार रखनी होगी। आरती की थाली में कपूर की टिकियां रखनी होंगी। नैवेद्य के लिए फल व दूध रखना होगा। बाबूजी पूजा की किताब आधा घंटे तक पढ़ते हैं। फिर घंटी बजाकर आरती उतारते हैं। इस बीच बीबीजी मेज़ पर गरम-गरम नाश्ता लगाती हैं।

आरती के समय घर के सब लोगों को दौड़कर वहां पहुंचना होता है और भभूत का तिलक लगाना होता है।

बाबूजी काले कपड़ों में ही दफ़्तर जाते हैं। चप्पल नहीं पहनते। नहीं पहनते तो क्या हुआ? कार को छोड़कर पांव ज़मीन पर थोड़े ही रखते हैं। यह सब करना रमेश के बस की बात है क्या? बिना चप्पल बाज़ार में चलना कितना मुश्किल होता है!

"मैं क्यों फिकर करूं? जो भी तकलीफ़ है, वही भोगेगा।" मंगा ने सोचा। एक तरफ़ रमेश के माला लेने की बात सुनकर वह सोच रही है, 'कैसे निभेगा यह सब?' तो दूसरी तरफ़ मन कह रहा था 'थोड़े दिन तो घर में शांति रहेगी', 'अच्छा ही रहेगा।' इतने में उसे हंसी भी आ गयी। उससे पूछा थोड़े ही था रमेश ने कि 'क्यों री मंगा, माला लेने की सोच रहा हूं, तू क्या सोचती है?'

असल में रमेश किसी बात में मंगा से सलाह नहीं करता। पिछले साल भी ऐसा ही किया था। पानी के पम्प की सुविधा वाले मकान में रहते थे। रमेश ने मकान मालिक से झगड़ा किया और मिनटों में मकान बदल दिया था। मंगा से यह नहीं पूछा था कि यह मकान तुझे पसन्द है या नहीं? नई जगह पानी नहीं है। मरो या जीओ। सीढ़ियां चढ़कर ऊपर तक पानी ढोना पड़ता है। पड़ोस के कुछ पुरुष कांवड़ों में पानी भर लाते हैं, फिर काम पर चले जाते हैं। पर रमेश यह सब नहीं करता। शुरू-शुरू में वह बहुत रोयी। अब आदत पड़ गयी है। चाहे उसके रोने की वजह से या अड़ोस-पड़ोस के मर्दों की देखादेखी, किसी-किसी दिन रमेश भी कांवड़ कंधे पर उठा लेता है। इतने से ही बुढ़िया मां का दिल दुखने लगता है। "अरे बेटा संभलकर चला करो,..." वह कहती रहती है।

घर लौटकर मंगा ने भी अपनी डेढ़ कोठरी की खोली में झाड़-पोंछकर रंगोली बनायी। जहां काम करती है, वहां किसी से मिन्नत करके आम की पत्तियां लाकर दरवाज़े पर बांध दीं। आधी कोठरी में साड़ी का पर्दा टांगकर मंदिर बना दिया। टोले-मुहल्ले में उससे पहले माला लिए हुए लोग, भविष्य में लेने का इरादा रखने वाले लोग, उनकी मांएं, दीदियां, पत्नियां, भाभियां, सबने मंगा को ढेर सारी सलाह और हिदायतें दीं।

"हाय रे, लगता है, माला रमेश ने नहीं, मैंने ली है।" मंगा ने मन में कहा।

"देख री मंगा, रमेश से कहना, कल से वह नाश्ते मे फेरीवाले के यहां से इडली-दोसा न खाया करे। स्नान करके, साफ़-सुथरी होकर तुझे ही घर में कुछ बनाकर देना होगा।" किसी पड़ोसिन ने चेताया।

"आज के बाद से रमेश 'तेरा आदमी रमेश' नहीं है री! साच्छात भगवान है, जानती है न? जो करना है, ख़ूब सर्धा से करना। बेटा होगा।" दूसरी ने हिदायत दी।

अगले दिन नदी में स्नान करने के बाद लाल रंग के नए कपड़ा पहन, गले में रुद्राक्ष की माला, माथे पर चंदन की बिन्दी लगाकर रमेश आया, तो मोहल्ले-टोले के लोगों ने उसके पैर छूकर प्रणाम किया। मंगा ने भी प्रणाम किया।

"आज नाश्ता क्या बनाकर देगी?" रमेश ने पूछा। असल में मंगा को यह नाश्ता-वाश्ता बनाने की मंगा को आदत नहीं है। रमेश सवेरे फेरीवाले के यहां से या किसी छोटे होटल में जो मन करे, वह खा लेता है। मंगा को किसी-न-किसी बीबीजी से कुछ खाने को मिल जाता है। बुढ़िया के साथ भी नाश्ते का कुछ चक्कर नहीं है। वह थोड़ा-सा-बासी भात खा लेती है। दोनों बच्चों को थोड़ा दूध देकर मंगा काम पर चली जाती है।

दोपहर का खाना बनाकर बुढ़िया रख देती है। अब साक्षात् भगवान बना हुआ रमेश रात का बचा भात कैसे खाएगा? ग़लत बात होगी। माला लिए हुए रमेश के दोस्तों की बीवियों ने भी तरह-तरह के नाश्ते बनाने शुरू कर दिए हैं।

"आज के दिन रमेश के लिए मैं कुछ भिजवा दूंगी। कल से अपना इन्तज़ाम कर लेना।" एक मालाधारी की पत्नी ने दया दिखायी।

उससे एक दिन पहले ही रमेश बाज़ार से चार जोड़े लाल कपड़े, दो तौलिए, दो चादरें और एक नई चटाई ख़रीद लाया था। दूसरों की इस्तेमाल की हुई चीज़ों का प्रयोग पूजा में नहीं कर सकता था!

"सब्ज़ी मंडी जाकर शाम को घर का कुछ ज़रूरी समान लाऊंगी, पैसे दे दो।" मंगा बोली।

"मेरे पास कहां हैं पैसे? जो थे, उनसे कल कपड़े वग़ैरह ले आया हूं न! तू ही कुछ कर!" रमेश ने पल्ला झाड़ लिया।

'भवानी' से तकरार करना अच्छा नहीं होता इसलिए मंगा ने कहा,"ठीक है।" और सब्ज़ी मंडी जाकर सब्ज़ी, फूल-फल, नारियल, अगरबत्तियां, कपूर की टिकिया, उड़द की दाल, इडली का मोटा और पतला रवा, गेहूं का आटा सब ले आयी। साथ ही बाज़ार से इडली बनाने वाला कुकर भी खरीद लायी।

अय्यप्पा की माला का नियम है कि माला वाले को ही नहीं, उससे बात करने वालों को भी झूठ नहीं बोलना चाहिए। इसलिए मंगा को यह सच बताना ही पड़ा कि उसने समय-समय पर जो पैसे छिपाकर रखे थे, उन्ही पैसों से यह सामान लायी है। और दिन होते तो कह देती कि काम पर से उधार करके लायी है।

नियम के अनुसार इन दिनों रमेश को रात में भी खाना नहीं खाना चाहिए। नाश्ता ही करना चाहिए।

सवेरे नाश्ता, दोपहर को भोजन, रात को फिर नाश्ता। यह नाश्ता कोई चाहे जितना करे, भोजन के बराबर तो नहीं होता न, इसकी नाखुशी अलग।

पहले मंगा रोज़ सवेरे छः बजे उठती थी, घर की सफ़ाई करके पानी भर लाती, और फिर बच्चों के लिए दूध गरम करके काम पर चली जाती थी। घर लौटती तो बारह बज जाते।

इस बीच सास बच्चों को खाना खिलाकर नहलाती थी। मंगा आकर कपड़े धोती और रमेश के लिए कोई सब्ज़ी बनाती। वह और उसकी सास बीबियों की दी हुई सब्ज़ी या दाल से खाना खा लेतीं। रमेश को वे चीज़ें अच्छी नहीं लगतीं थीं। तीन-चार दिन में एक बार उसे मांस या मछली चाहिए। शाम को रोज़ एक 'पौवा' तो चाहिए ही। पर अब मंगा की दिनचर्या बदल गयी है।

अब उसे साढ़े-चार बजे उठना होता है। नदी पर नहाकर रमेश के लौटने तक उसे पूजा की सारी तैयारी करनी होती है। नाश्ता भी बनाना होता है। साथ ही रमेश के दोपहर के खाने के लिए साग-सब्ज़ी बनानी होती है। रमेश आजकल बारह बजे तक घर आ जाता है और खाना खाकर चला जाता है। मंगा को काम से लौटकर एक बार फिर नहाना पड़ता है, क्योंकि वह घरों में मैले कपड़े धोती है और कूड़ा उठाती है। उन कपड़ों में 'भवानी' को भोजन नहीं परस सकती! इतनी बार बदलने से गट्ठर-भर कपड़े धोने के लिए हो जाते हैं। जब से घर में पूजा-पाठ शुरू हुआ है, तब से सास भी जब बाहर जाती है तब-तब धोती बदल लेती है। छोटी अब भी बिस्तर गीला कर ही रही है। इसके अलावा रमेश के कपड़ों को अलग से धोना-फैलाना होता है। यह सब करके मंगा को फिर से काम पर जाना होता है। काम से लौटने के बाद रमेश के लिए नाश्ता क्या बनाया जाए, इसको लेकर माथापच्ची शुरू! रोज़ एक ही चीज़ खाने से रमेश को चिढ़ जो होती है।

बीबीजी तो बहुत तरह की चीज़ें बनाती रहती हैं। मंगा तो उन चीज़ों के नाम तक नहीं जानती। बीबीजी बाबूजी के लिए ढेर सारे पकवान बनाती हैं, लेकिन एक दिन भी 'अपने आदमी को खिलाना री' कहकर उसे कुछ देती नहीं। कहती हैं कि माला लिए हुए बाबूजी के खाने से पहले किसी को कुछ भी देना मना है।

बाबूजी का खाना पूरा होने तक वह रुक कैसे सकती है?

किसी चीज़ को लेकर पूछने पर कि यह कैसे बनाती हैं, बीबीजी कहती हैं- किताब में से पढ़कर बनायी है। घर में गैस का चूल्हा, मिक्सी वग़ैरह हो तो चाहे जितनी चीज़ें झटपट बना लो!

हफ़्ता बीतते-बीतते मंगा का उत्साह ठंडा पड़ने लगा। रमेश तो अपनी मस्ती में है, पेटभर खा रहा है, बीड़ी नहीं पीता, पास से निकलता है तो कपूर की महक आती है। इस तरह वह उसके पास आया था कभी। हमेशा बीड़ी और शराब की बदबू के साथ ही बीती थी उसकी गृहस्थी। रात को वह चाहे कितना भी बन संवर ले, पर क्या फ़ायदा? रमेश तो शराब और बीड़ी की बू लेकर ही पास आता था। लोग कहते हैं कि 'भवानी' के बारे में इस तरह सोचने से आंखों की रोशनी चली जाती है। मंगा ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया और माफ़ी मांगी।

कपूर और इत्र की खुशबू न हो न सही, बीड़ी और शराब की बू गायब हो, तो भी बहुत बड़ी बात है।

घर में जो सामान आया था, उसे फुर्र होते देर नहीं लगी। डरते-डरते मंगा ने एक बार फिर रमेश से पैसे मांगे।

"मेरे पास कहां से आएंगे! मैं भी बीच-बीच में फूल और नारियल तो लाता ही रहा हूं। तू ही कुछ कर। तेरे बक्से में कुछ पैसे ज़रूर पड़े होंगे।"

'क्यों नहीं, क्यों नहीं, तुमने जो ढेर सारा कमाकर मेरे हाथ में दिया है। दिया होता तो इस तरह दर-दर जाकर यह अंट-शंट काम करके मुझे गिरस्ती चलाने की ज़रूरत पड़ती? सर्दी में चार चादरें खरीदने की सोची थी। बच्चों को पुरानी साड़ियां ओढ़ा रही हूं।' यह सब कहने के लिए आवेश के साथ मंगा ने सर उठाया। लेकिन रमेश के चेहरे पर मुस्कराहट, माथे पर चंदन की बिन्दी और गले में रुद्राक्ष की माला देखकर उसने अपने गुस्से को दबा लिया।

"काम पर फिर उधारी करनी पड़ेगी।" मंगा बोली।

"यह भगवान का काम है मंगा, ऐसे बोलेगी तो कैसे चलेगा? अपनी बीबीजी में से किसी से मांगकर ले आ।" सास ने बेटे का पक्ष लिया।

'ठीक है, अब चारा ही क्या है! सोचकर मंगा सब घरों से एक-एक सौ रुपये पेशगी ले आयी। बच्चों को बुख़ार आए, घर के लिए सामान खरीदना हो या रिश्तेदारों की सेवा टहल के लिए मांगने पर जो मालकिनें दस चक्कर लगवा देती थीं, उन्होंने रमेश की माला की बात सुनते ही पैसे दे दिए। पुण्य कमाने का लालच किसे नहीं होता?

पैसे तो मिल गये, लेकिन अगले महीने से पगार में तो टोटा पड़ेगा न।

"जिसने चालीस दिन से सब छोड़ रखा है, वह अब शराब छुएगा ही नहीं। अगले महीने से सारी पगार तेरे हाथ में धर देगा।" मंगा के आंसू पोंछने के लिए सास बोली। वह भी रमेश का हाल जानती है। उसे जो ढाई हज़ार मिलते हैं उसमें से घर तक पन्द्रह सौ ही पहुंचते हैं। पूरी कमाई पहुंचे तो मंगा को इतनी तक़लीफ़ें उठाने की क्या ज़रूरत है? फिर वह इस तरह जूठे बरतन मलती और मैले कपड़े पछाड़ती क्यों फिरती? मंगा हमेशा सोचती है थोड़ी फ़ुर्सत मिले, तो कुछ सीना-पिरोना सीखकर किसी रेडीमेड की दुकान पर काम लग जाए। तब गुज़ारा अच्छी तरह चलेगा। लेकिन ऐसा शुभ दिन आज तक तो नहीं आया।

बीबीजी के घर में भजन का आयोजन हुआ। उस वैभव का बखान कोई क्या करे। पूरी गली में शामियाना

लगाया गया। जलती-बुझती, रंग-बिरंगी बत्तियां, ठाकुर जी के लिए बड़ा-सा मंदिर और पूरे घर में फूलों की सजावट। हज़ारों का खर्चा हुआ। सुनने में आया कि इस तरह सजावट का काम करने के लिए कुछ ख़ास लोग होते हैं। जाने कितने साधु-सन्त आए। भजन मंडली और साधुओं को ख़ूब मोटी दक्षिणा मिली है। बाबूजी के दोस्तों के घर में नौ क़िस्म की मिठाइयां बनी थीं, इसलिए बीबीजी ने अपने प्रसाद में ग्यारह क़िस्म की मिठाइयां बनवाई।

मंगा ने घर आकर वहां की पूरी रंगत के बारे में रमेश को बताया।

"हां-हां, जिसकी जैसी बिसात हो वैसा भजन रखवा ले, तो अच्छा ही रहेगा।" एक पड़ोसिन बोली।

"रमेश तुम भी ज़रूर रखवाओ, तुम्हारी बरकत होगी। इस बार लड़का होगा।" दूसरे पड़ोसी ने सलाह दी।

"ऐसा भजन हमारे बस की बात नहीं", मंगा ने टोका।

"जितना बड़ा पेड़, उतनी ज़्यादा हवा। तुमसे किसने कहा है कि उस 'लेवेल' पर रखवाओ। जैसी हमारी बिसात है, वैसा ही रखवा लेंगे। क्या कहते हो रमेश?" किसी और ने उकसाया।

उस वक़्त रमेश ने कोई जवाब नहीं दिया। मंगा पछताने लगी। यह सब उसने बताया ही क्यों? अगले महीने की लगभग पूरी पगार उसने पेशगी ले ली थी। इसके अलावा छोटे-मोटे उधार भी कई हो गये थे।

"अब मुझे कोई उधारी न देगा 'भवानी'।" मंगा बोली, चालीस दिन में अभी दस दिन बाकी थे।

भोर में रोज़ ठंडे पानी से नहाने की वजह से ज़ुकाम और बुखार हो गया तो मंगा को डॉक्टर के पास दौड़ना ही पड़ा। घर में एक तरफ 'भवानी' का पाठ हो, और वह खांसती-कराहती लेटी रहे, तो कैसे चलेगा? बेचारे 'भवानी' का काम कौन करेगा? बुखार में सौ रुपये उड़ गये। छोटी की नाक लगातार बहती रही। उसके लिए भी दवाई आयी।

"हम भी भजन रखवा रहे हैं।" दो दिन बाद रमेश ने घोषणा की। 'अब मुझे कोई उधारी न देगा भवानी', मंगा ने अपनी स्थिति साफ़ की।

"कोई बात नहीं, मैं देख लूंगा। जहां मैं काम करता हूं, वहां से कुछ पैसे ले लूंगा।" रमेश ने उत्साह से कहा। इतने दिन वहां से लिया क्यों नहीं, मंगा की यह पूछने की हिम्मत नहीं हुई।

"सुनो 'भवानी' मेरी एक सलाह मानो। आप लोग चार दोस्त हैं न, चारों मिलकर एक दिन भजन रख लेना। खर्चा कम पड़ेगा।" किसी तरह हिम्मत जुटाकार मंगा बोली।

"ऐसा नहीं हो सकता मंगा। इस बार ऐसे ही चलने दे। पहली बार माला ली है न! अगली बार मिल-जुलकर कर लूंगा। तू फिकर न कर, मैं सब संभाल लूंगा। तुझे कोई तकलीफ़ न होगी। हर काम के लिए आदमी मौजूद हैं। जैसे भजन गाने वाले हैं, वैसे प्रसाद तैयार करने वाले हैं। सब मेरे ऊपर छोड़ दे।" रमेश ने आश्वासन दिया।

'चलो चलने दो, गालियां नहीं निकाल रहा है, बात-बेबात हाथ नहीं चला रहा है। कुछ-कुछ भले आदमी जैसी बात कर रहा है, यही बहुत है।' मंगा सोचती रही।

रमेश के दोस्त ने साईं बाबा के भजन का कार्यक्रम रखवाया। अगले दिन रमेश की बारी थी। उसने शामियाना लगवाया। माइक और लाइटों का भी इन्तज़ाम किया। अपनी और अपने भगवान दोनों की पसन्द के अनुरूप सारा प्रबन्ध करवाया। ग्यारह क़िस्म की न सही, तीन क़िस्म की मिठाइयां बनवायीं। जहां काम करता है, वहां से उसने कितना उधार किया, यह तो नहीं मालूम। पूछा तो 'अभी नहीं, यह बात बाद में करेंगे' कहकर टाल दिया। सबको प्रसाद लेने आने का न्योता दिया। भगवान की कृपा से दीक्षा अच्छी तरह पूरी हुई। भवानी के हज़ारों भक्तों के साथ मिलकर रमेश दर्शन करने पहाड़ पर हो आया। कृष्णा नदी में स्नान करके उसने माला उतार दी।

घर में भवानी का मंदिर हटा दिया गया। अब रमेश का रंग निखर आया था। गालों में कुछ-कुछ उभार भी आ गया था। चेहरे पर चमक आ गई थी।

रमेश की दीक्षा मंगा के लिए एक बड़ा यज्ञ साबित हुई थी। रमेश ने बाद में बताया कि जहां काम करता है, वहां से वह पांच हज़ार उधार मांग कर लाया है।

"कोई बात नहीं बेटे, उधार भगवान के लिए किया था, तूने अपने लिए तो नहीं किया न, चुकता कर देना।" सास इत्मीनान से बोली।

मंगा अब तक खूब थक चुकी है।

"क्या बताऊं बीबीजी, मेरे आदमी की दीच्छा अब जाकर ख़त्म हो गयी है। आज उबर गयी हूं मैं।" अपनी एक बीबीजी से मंगा ने कहा।

"मान ले कि तू अपने आदमी से बग़ैर पूछे ऐसी कोई दीक्षा लेती है। तब वह तेरी तरह इसी सेवा-टहल करेगा?" बीबीजी ने पूछा।

"औरतों से यह सब कहां होगा बीबीजी!" मंगा ने मायूसी से जवाब दिया।

"इसीलिए अय्यप्पा स्वामी ने होशियारी से औरतों को अपने यहां आने से मना कर दिया है।" केवल पुरुष ही यह दीक्षा ले सकते हैं।" बीबीजी बोलीं।

"तुझे क्या पसंद है मंगा, अपने आदमी का दीक्षा में रहना या मामूली तरीक़े से रहना?" बीबीजी ने अनायास ही प्रश्न किया।

मंगा क्या जवाब देती? वह सचमुच नहीं जानती थी। दोनों स्थितियों की अपनी-अपनी परेशानियां तो हैं। शाम को वह घर पहुंची तो जो बुढ़िया कभी कुछ लाकर नहीं देती थी उसने चमेली का गजरा लाकर मंगा को थमा दिया।

"रमेश ने कहा है कि वह जल्दी लौट जाएगा। जल्दी से खाना बना डाल। और तू भी नहा-धो ले।" सास ने आदेश दिया।

मंगा को लगा कि उसे चक्कर आ रहा है। पूरा बदन दर्द कर रहा है। उसकी इच्छा है कि जल्दी से खाना खाकर सो जाए। उसे चार-पांच दिन के आराम की ज़रूरत है। पर यह सुख उसकी किस्मत में कहां?

रमेश घर आ गया। एक बार फिर वह खूब भूख लेकर आया। अब वह साक्षात् भगवान नहीं है। वह तो वही पुराना रमेश है।

सवेरे आकर झाड़ू-बुहार करती मंगा को थका-थका और अनमना देखकर मालकिन ने पूछा, "क्या हुआ मंगा? ऐसी क्यों लग रही है? तेरे आदमी की दीक्षा तो ख़त्म हो गयी है न?"

मंगा ने कोई जवाब नहीं दिया।

दीक्षा लेने से पहले जिस तरह रमेश ने मंगा से कुछ नहीं पूछा था, ठीक उसी तरह पिछली रात भी उसने कुछ नहीं पूछा था।

कुछ देर चुप्पी साधकर मालकिन बोली "भक्ति हो या अनुरक्ति, भोग उनका और मरण हमारा।"

मंगा उस टिप्पणी से अब भी जूझ रही है।

अनुवादः जे. एल. रेड्डी

केरल के सबरिमलै पहाड़ पर स्थित अय्यप्पा स्वामी की 40 दिन की दीक्षा के आरम्भ में काले कपड़ों के साथ माला पहनी जाती है। इसे माला लेना कहते हैं। दीक्षा के दिनों में खान-पान और व्यवहार में संयम से रहना पड़ता है और ब्रह्मचर्य का पालन करना होता है। साधारण आर्थिक स्थिति के लोग, जो अय्यप्पा के मन्दिर नहीं जा सकते, वे भवानी की दीक्षा लेते हैं और दीक्षा के अन्त में विजयवाडा में स्थित देवी के मन्दिर जाते हैं। दीक्षा के नियम दोनों में समान हैं। जब तक कोई भवानी की माला डाले रहता है, तब तक सब को उसे 'भवानी' कहना होता है। सबरिमलै के अय्यप्पा मन्दिर में मासिक धर्म होने की अवस्था पार करने तक स्त्रियों का प्रवेश वर्जित है।